B.ed. 1st year Paper-C2, Unit-2

* सत्यशोधक समाज *

प्राचीन काल से ही निम्न जातियों का शोषण होता रहा है और उनकी सामाजिक स्थिति दिन-पर दिन दयनीय होती चली गई। जाति एवं धर्म के नाम पर उनका शोषण होता रहा, उन्नसवी शताब्दी में जब भारत में 'पुनर्जागरण आन्दोलन' हुआ, उस समय समाज सुधार की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। ये समाज सुधार आन्दोलन धर्म एवं समाज सुधार से सम्बन्धित रहे। इन्होंने निम्न जातियों की सामाजिक, आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए कोई विशेष कार्य नहीं किया, तब निम्न जातियों के कुछ जागरूक लोगों को ऐसा महसूस हुआ कि बिना स्वयं प्रयत्न किए निम्न जातियों का उद्धार सम्भव नहीं है। अतः भारत के विभिन्न भागों में निम्न जातियों के द्वारा अनेक आंदोलन हुए। ये लोग अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होने लगे। निम्न जातियाँ इतनी सजग हो गई कि वे अपने अधिकारों के लिए आवाज बुलन्द कर दी। राजनीतिक अधिकारों की माँग करने लगी, महाराष्ट्र में दलित आन्दोलन में प्रमुख है - सत्यशोधक समाज और महार आन्दोलन।

यह आंदोलन ज्योतिबा फूले द्वारा 1870 ई० के दशक में अपनी पुस्तक गुलामगिरी और सार्वजनिक सत्यधर्म पुस्तक एवं सत्य शोधक समाज द्वारा प्रारम्भ किया गया था।।

इस आन्दोलन का उद्देश्य ब्राह्मणों के अत्याचारों से दलितों की रक्षा करना और दलितों को उनके अधिकारों को दिलाना था।

कार्य –

(i) जनता (मुख्यतः निम्न जातियाँ) में पुजारी वर्ग की स्वेच्छाचारिता के खिलाफ जागरूकता पैदा करना।

(ii) दलितों के अधिकारों का दूसरा कार्य था आंदोलन का नेतृत्व करना।

इस आंदोलन में शहरों के शिक्षित निम्न जातियों के लोग और गाँव की अक्षत जनता दोनों ही सम्मिलित थी।

ज्योतिबा फूले ने 24 सितम्बर 1873 ई० को सत्यशोधक समाज की स्थापना की। और निम्न जातियाँ अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होने लगी।

=